PAGE NO.:

DATE: / /

# रीति सिद्धान्त

प्रवर्तक - वामन समय - 9 वी रचना - काव्यालंकारसूत्र
ग्रंथ वृत्ति

दंडि - रीति को मार्ग कहा

रीति शब्द पहले वामन दिया

भामह - 10 गुण उल्लेख किया था स्पष्ट नहीं किया
काव्य मे दोष नही होगा वो काव्य गुण है

दंडि ने भी 10 गुण माने है।

वामन - रीतात्मा काव्यम

रीति काव्य की आत्म है - वामन

विशिष्ट पदरचना रीति:

शब्द वाक्य मे आ जाता है वो पद बनता है
विशिष्ट पद रचना ही रीति है

विशेषो गुणात्मा

विशेष जो है उसमे गुण हो

काव्य की शोभा बढती है वो गुण है

वामन - 10 गुण बताये है और उससे तीन रीतियाँ बनायी है।

3 रीतियाँ

1) वैदर्भी
2) गौडी
3) पांचाली

DATE: / /

दस शब्द गुण और अर्थ गुण है

1) ओज
2) प्रसाद
3) श्लेष
~~विश्लेष~~
4) समता
5) ~~समान~~
6) समाधि
7) माधुर्य
8) सौकुमार्य
9) उदारता
10) अर्थव्यक्ति
11) कान्ति

~~काव्य शोभायाम् कर्तारो: धर्मा~~ ~~[illegible]~~ ~~गुणा:~~
काव्य शोभाया: कर्तारो: धर्मा गुणा:

रीतियाँ
1) वैदर्भी
इसमे दस गुण है
वामन ज्यादा महत्व दिया
2) गौडी
ओज और कान्ति गुण है

समास - दो पद मिलता है
संधि - दो वर्ण मिलता है

PAGE NO.:
DATE: / /

पँचाली :
माधुर्य और सौकुमार्य

1) ओज :
भाषा मजबूत होता है
धाडात्व ओज गुण है, समास बहुला है
ओज गुण मे वीर रस होता है।
उदा रामशक्ति पूजा 18 समासिक पद

2) प्रसाद
शिथिल (ढिलापन) मे होता है प्रसाद गुण।

3) श्लेष :

4) समता :
समानता होता है जैसे काव्य रचना शुरु से अंत मे समानता होता है शैली हो, छंद भाषा हो कोई क्लिष्ट कालित्व नही होता।
उदा : सरोज स्मृति

5) समाधि :
आरोह और अवरोह हो और उतार-चढाव हो वो समाधि गुण है।

DATE : / /

6) माधुर्य :

शब्द अलग - अलग होते है। समास को निसेध करता है। माधुर्य कविता क्लिष्ट, सरल होता है पढ़ने के बाद माधुर्यता आती है।

7) सौकुमार्य :

कर्णप्रिय होनी चाहिए। सुनने मे मधुरता होनी चाहिए। सरल होनी चाहिए कठोर नही होनी चाहिए।

8) उदारता :

जो कविता मे सजाये गये है शब्द नाँच रहे है यहाँ पे उदारता होता है।

9) अर्थव्यक्ति :

अर्थ मे दिक्कत नही होती समझने आती हो तो अर्थव्यक्ति कविता कहते है।

10 कान्ति :

नवीनता हो कविता मे उसे कान्ति कविता कहते है। लेखन मे कान्ति गुण है
उदा : प्रयोगवाद की कविता - अज्ञेय कवि की कविता

PAGE NO.:
DATE: / /

# अर्थ गुण

1) ओज :
अर्थ मे प्रौढता होती है । उदारता होती है

2) प्रसाद :
अर्थ स्पष्ट रुप से होता है वो प्रसाद है। पढने के अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

3) श्लेष :
कविता एक हो उसके अर्थ कई है वो श्लेष है। उदा : रामशक्तिपूजा

4) समता :
समता कविता में अर्थ विषम नही है समानता हो

5) समाधि :
कविता मे मूल अर्थ एक ही दिखाना वो समाधि है। कविता मे मूल अर्थ छिपा रहता है। वो कविता का केन्द्र बिंदु रहता है।

6) माधुर्य :
कविता का अंदाज है उसको उक्ति हो उसमे साधारण अर्थ नही होता उसमे टेडापना हो उसे माधुर्य कविता कहते है। बात करने को वैचित्र होता है।

DATE : / /

7) सौकुमार्य :
कविता मे अर्थ और लाग कोमलता होनी चाहिए

8) उदारता :
अर्थ के दृष्टि से ग्राम्यत्व मे अग्राम्यत्व का दोष का अर्थ स्पष्ट नहीं आनी चाहिए ;

9) अर्थ व्यक्ति :
कविता मे सरलता से किसी का कवित्व अर्थ समझ मे आ जाता है तो अर्थ व्यक्ति कहते है।

10) कान्ति :
जिस तरह दीप की उजाला होता है उसी तरह अर्थ की कान्ति स्पष्टी और फैला हुआ हो।

ध्वनि सिद्धान्त - ९ वी शताब्दी
प्रवर्तक - आनंदवर्धन
रचना - ध्वन्यालोक

ध्वनि का स्वरूप

जहाँ पर वाच्य (अर्थ) और वाचक (शब्द) अपने - अपने अस्तित्व को गौण (अलग) बनाकर जिस विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते है वह अर्थ ध्वनि कहलाता हैं

उदा - 1) जिस प्रकार अंगनाम (स्त्री) के सुन्दर अवयव (अंग) और उनसे फूटता (निकला) हुआ लावण्य परस्पर भिन्न - भिन्न पदार्थ है उसी प्रकार महाकवियो की वाणी मे प्रसिद्ध अवयव (शब्द और अर्थ) और उनसे अभिव्यक्त प्रतीयमान अर्थ भी परस्पर भिन्न - भिन्न होते है

उदा - 2) जिस प्रकार दीप शिखा और उससे निःसृत प्रकाश अलग - अलग पदार्थ है उसी प्रकार वाच्यार्थ और उससे व्यंजना शक्ति के द्वारा अभिव्यक्त व्यंग्यार्थ अलग - अलग तत्त्व है

उदा (3) ध्वन्यार्थ तो सब सुंदरियों की लज्जा की भांति है।

DATE : / /

* ध्वनि शब्द और अर्थ से अलग तत्व है
* ध्वनि लावण्य प्रकाश और लज्जा की तरह
एक आंतरिक तत्व है

शब्दार्थ साधन है और ध्वनि साध्य है
शब्द और अर्थ व्यंग्यार्थ भी हो सकता है
विरोधी भी हो सकती है। व्यंग्यार्थ और वाच्यार्थ
ध्वनित प्रथमार्थ है।

काव्य की जो आत्मा ध्वनि है
मम्मट और जगन्नाथ भी काव्य को आत्मा माना है

ध्वनि काव्य के ३(तीन) भेद है
I ध्वनि काव्य उत्तम
II गुणीभूतव्यंग्य काव्य मध्यम
III चित्र काव्य निरत्तम

1) ध्वनि काव्य
ध्वनि काव्य को आनंद वर्धन महत्व देते है। यहाँ ध्वनि दिख जाता है प्रस्फुटित होता है

2) गुणीभूतव्यंग्य काव्य
गुण समझने के बाद व्यंग्यार्थ दिखायी देता है। ध्वनि शब्दार्थ के साथ चलता है

3) चित्र काव्य :

ध्वनि व्यंग्यार्थ होता है अप्रस्फुटित होता है। व्यंग्यार्थ पूरी तरह डूब जाता है ऊपर नही आता है। यह अप्रस्फुटित होता है।

I) ध्वनि काव्य के भेद

1 अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि

2 अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य ध्वनि

3 वस्तु ध्वनि

4 अलंकार ध्वनि

5) रस ध्वनि (असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि)

1) अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि

जहाँ पर वाच्यार्थ अपना अर्थ रखते हुआ अन्य (व्यंग्य) अर्थ मे संक्रमित (शब्द और अ) हो जाता है वहाँ पर अर्थान्तर-संक्रमितवाच्य होता है

उदा- यह घर अच्छा है।

2) अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य ध्वनि ! -महत्व होता है

जहाँ व्यंग्यार्थ के आगे वाच्यार्थ तिरस्कृत होता है (यानी वाच्यार्थ का कोई महत्व नही रहता)

उदा आपने तो मुझे बहुत उपकार किया है मैं अजीवन इसको नही भूलुंगा

दुष्टता किया

PAGE NO.:
DATE: / /

3) वस्तु ध्वनि :
जहाँ पर व्यंग्यार्थ वस्तुओ के ध्वनि मे प्रतीत होता है।
वस्तुओ के ऊपर आरोपित व्यंग्यार्थ है

4) अलंकार ध्वनि :
जहाँ पर व्यंग्यार्थ किसी अलंकार के रूप मे प्रतीत होता है
उदा - उपम अलंकार आपका मुख चंद्रमा जैसा है

5) रस ध्वनि :
जहाँ पर व्यंग्यार्थ विभाव अनुभाव और संचारी भाव संयोग पर आधारीत होता है वही रस ध्वनि होता है।

1 रस
2 रसाभाँस
3 भाव
4 भावाभाँस
5 भावोदय
6 भावसंधि
7 भावशबलता - ज्यादा भाव प्रदर्शित
8 भावाशान्ति

गूढ़ - रहस्य
अगूढ़ - अस्पष्ट

## II गुणीभूतव्यंग्य काव्य

जहाँ पर व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ की अपेक्षा गौण अथवा समान हो वहाँ गुणीभूतव्यंग्य काव्य होता है।

व्यंग्यार्थ गौण है या समान है

1) अगूढ़ गुणीभूतव्यंग्य
जहाँ पर व्यंग्यार्थ गूढ़ न हो बल्कि स्पष्ट हो। रहस्य नहीं है स्पष्ट है

2) अपरांग गुणीभूतव्यंग्य काव्य
जहाँ पर व्यंग्य रस, स्थायीभाव, संचारी भाव, अनुभाव, आदि में से कोई एक दूसरे का सहायक बनकर उत्कर्ष करे तो वहाँ पे अपरांग गुणीभूतव्यंग्य काव्य कहा जाता है।

3) वाच्यसिद्ध्यंग गुणीभूतव्यंग्य काव्य
जहाँ व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ सिद्धि के लिए उसका अंग बन जाता

4) अस्फुट
जहाँ पर व्यंग्य स्फुट ना होकर बहुत देर मे समझ मे आता वहाँ पर अस्फुट गुणीभूतव्यंग्य काव्य कहते हैं